



भारतीय परिवेश में जनसांख्यिकीय चर की खेलों में भूमिका

डॉ. जिनेन्द्र बौद्ध

एसोसिएट प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद विभाग

देवनागरी कॉलेज, मेरठ ।

सार

जनसांख्यिकी जनसंख्या का विज्ञान है। जनसांख्यिकी विज्ञानी तीन मुख्य जनसांख्यिकीय प्रक्रियाओं (जन्म, प्रवासन और उम्र बढ़ना (मृत्यु सहित)) की जांच करके जनसंख्या की गतिशीलता को समझना चाहते हैं। ये तीनों प्रक्रियाएँ जनसंख्या में परिवर्तन में योगदान देती हैं, जिसमें लोग पृथ्वी पर कैसे निवास करते हैं, राष्ट्र और समाज बनाते हैं और संस्कृति, शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद का विकास करते हैं। जनसांख्यिकीय कारक, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, एवं शारीरिक फिटनेस जैसे महत्वपूर्ण कारकों के साथ, आज के सामाजिक परिवेश में खिलाड़ी की खेल पसंद, खेल आकर्षण और जीवन को सीधे प्रभावित करते हैं। इस शोध पत्र में छह जनसांख्यिकीय चर पर चर्चा की है; भारतीय परिवेश को ध्यान में रखते हुए आयु, लिंग, जाति, धर्म, आय और वैवाहिक स्थिति। खेल परिसर की सीमा में प्रवेश करने के लिए बहुत कम संख्या में लोग सामाजिक, घरेलू और आर्थिक सीमाओं को पार करते हैं। ये जनसांख्यिकीय परिवर्तन विश्व के प्रसिद्ध खिलाड़ियों के साथ-साथ स्थानीय स्तर की खेल गतिविधियों पर भी सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। क्योंकि खिलाड़ी भी इसी समाज का एक हिस्सा है, जो समाज के भीतर होने वाले उतार-चढ़ाव और संरचनाओं से खुद को अलग नहीं कर सकता है। जबकि खेल अपने आप में एक सामाजिक गतिविधि मानी जाती है, जिसमें खिलाड़ी समूह में भाग लेता है। खेल गतिविधियों में भाग लेने से खिलाड़ी समाज में बढ़ रही बुरी आदतों, नशे और लड़ाई-झगड़े आदि से दूर रहकर अपनी ऊर्जा को सही दिशा में लगाता है। यह आज के तकनीकी निष्क्रिय माहौल में युवाओं को सक्रिय जीवनशैली जीने के लिए प्रेरित करता है।

संकेत शब्द: जनसांख्यिकीय, धर्म, सामाजिक बाधाएँ, आयु, लिंग, और सामाजिक आर्थिक ।

परिचय

जनसांख्यिकी का अंग्रेजी रूपांतरण डेमोग्राफिक होता है। जनसांख्यिकी शब्द की उत्पत्ति दो ग्रीक शब्दों से हुई है, डेमो का अर्थ जनसंख्या तथा ग्राफिया का अर्थ विवरण या लेखन से होता है। जनसांख्यिकी शब्द का पहली बार प्रयोग सन 1855 में बेल्जियम के सांख्यिकीविद अकिली गिलार्ड ने किया था खेल और शारीरिक गतिविधि में भागीदारी की कमी को लंबे समय से

एक खतरनाक वैश्विक समस्या के रूप में मान्यता दी गई है, जिस पर गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है। खेल और शारीरिक गतिविधियों में कम भागीदारी के इस वैश्विक मुद्दे की जांच के लिए कई अध्ययन किए गए हैं। खेल और शारीरिक गतिविधियों में भागीदारी की कमी का यह मुद्दा युवा किशोर आबादी को भी प्रभावित कर रहा है। खेलों में भाग लेने और शारीरिक गतिविधि की कमी के हानिकारक प्रभाव हो सकते हैं। शोधकर्ताओं का मानना है कि खेलों में भाग लेने से किशोरों और स्कूली छात्रों को उनके मनोवैज्ञानिक और सामाजिक लाभ, सकारात्मक मानसिक और शारीरिक स्थिति, सिगरेट पीने और अवैध नशीली दवाओं के उपयोग के निम्न स्तर और कम अवसाद के मामले में फायदा हो सकता है। हालाँकि अभी भी ऐसे कई अध्ययन हैं जो खेलों में शामिल होने के सकारात्मक परिणाम दिखाते हैं। जनसांख्यिकीय चर और शारीरिक गतिविधियाँ पर उनका प्रभाव निम्न प्रकार पड़ता है-

1. आयु

खेलों में भाग लेने से कई स्वास्थ्य लाभ होते हैं और यह बच्चों के बीच भी लोकप्रिय है। हालाँकि, यह देखा गया है कि उम्र के साथ खेलों में भागीदारी कम हो जाती है। खेल में भागीदारी के पैटर्न का पता आमतौर पर उम्र और लिंग के आधार पर लगाया जाता है। इस बात के प्रमाण हैं कि खेलों में भाग लेना एक युवा व्यक्ति की गतिविधि है। रिपोर्ट के मुताबिक 12-13 साल की उम्र में खेलों में भागीदारी का स्तर अपने चरम पर होता है, स्कूल के बाद खेल गतिविधियों में भागीदारी बढ़ जाती है। जबकि देश की 64% आबादी वर्तमान में खेल और शारीरिक गतिविधियों में भाग नहीं लेती है। आंकड़े बताते हैं कि सर्वेक्षण में शामिल लोगों में से 69% लोग स्कूल या अपने पड़ोस में पढ़ते थे और स्वीकार करते थे कि उन्होंने उस दौरान कोई खेल खेला था। लेकिन क्या बचपन से वयस्क होने तक खेलों में भागीदारी नाटकीय रूप से कम हो जाती है, यह एक बड़ा सवालिया निशान है। भारत में देखा गया है कि 4 से 10 साल की उम्र के बच्चे अपना ज्यादातर समय मोबाइल पर राइमिंग और टीवी कार्टून देखने में बिताते हैं। 10 साल से ऊपर के बच्चे अपना समय मोबाइल पर गेम खेलने और सोशल मीडिया पर व्यस्त रहने में बिताते हैं। किशोरावस्था में बच्चे खेलों में शामिल होने में रुचि दिखाते हैं। स्कूलों में केवल छोटे स्तर के खेलों जैसे योग, टेबल टेनिस, बैडमिंटन, टेनिस और अन्य मनोरंजक खेलों पर जोर दिया जाता है। यह सब अच्छे स्कूलों में ही संभव है। सामान्य निजी एवं सरकारी विद्यालयों में मुख्य रूप से बिना खेल उपकरण के खेलों जैसे-कबड्डी, खो-खो एवं वॉलीबॉल आदि गतिविधियों पर जोर दिया जाता है। ज्यादातर बच्चे खुद को दौड़ने तक ही सीमित रखते हैं। वे अपने परिवार की आजीविका के लिए भारतीय सेना या पुलिस में शामिल होने के जुनून के कारण भी ऐसा करते हैं। खेलों में बच्चे की भागीदारी उसकी अपनी जागरूकता पर भी निर्भर करती है। वह अपने बड़ों को देखकर खेल गतिविधियों में अधिक शामिल होता है। भारत के अधिकांश स्कूलों में खेल के मैदान की सुविधा नहीं है। स्कूल का पूरा ध्यान बच्चे के शैक्षणिक विकास पर है और इसमें बच्चे के माता-पिता का भरपूर सहयोग मिलता है।

किशोरावस्था के दौरान बच्चे की अतिरिक्त ऊर्जा का सही ढंग से उपयोग नहीं हो पाता है। बच्चे के पास खाली समय और अतिरिक्त ऊर्जा की उपलब्धता के कारण, वह नशीली दवाओं, असामाजिक गतिविधियों आदि जैसी अस्वास्थ्यकर आदतों को अपनाता है। उसे बुनियादी शारीरिक गतिविधियों और व्यायामों का बहुत कम ज्ञान होता है। यह सारी जानकारी उसे अपने स्तर पर सोशल मीडिया आदि के माध्यम से भी मिलती है इसलिए वह इनसे बहुत जल्दी ऊब जाता है। लगभग 30-35 वर्ष की आयु तक व्यक्ति को शारीरिक कमजोरी का अनुभव होने लगता है। और फिर वह खुद को स्वस्थ रखने के लिए शारीरिक गतिविधियों को अपनाता है लेकिन उस समय न तो उसके पास इनके लिए उचित समय होता है और न ही गतिविधियों का उचित ज्ञान। भारत में इस आयु वर्ग के सामान्य लोग ऐसी शारीरिक गतिविधियों को अपनाते हैं जो शरीर के लिए कम कष्टकारी होती हैं और शारीरिक गतिविधि के साथ-साथ मोबाइल पर बात करना भी इस श्रेणी में सबसे प्राथमिक स्तर पर आता है। 50-55 साल से अधिक उम्र के लोग धीरे-धीरे चलकर और कुछ योगाभ्यास करके खुद को स्वस्थ रखने की कोशिश करते हैं। इस आयु वर्ग में बहुत कम लोग सक्रिय खेल गतिविधियों को अपने जीवन का हिस्सा बनाते हैं। सामान्य तौर पर, उपरोक्त शोध इस बात का प्रमाण देता है कि उम्र के साथ खेलों में भागीदारी कम हो जाती है। ऑस्ट्रेलिया में अधिकांश प्रतिभागी (64%) 20 वर्ष से कम आयु के थे। 10-14 वर्ष की आयु में यह 27.6% थी, इसके बाद 5-9 वर्ष आयु समूह (19.9%) और 15-19 वर्ष आयु समूह (15.3%) थी। 10% से भी कम प्रतिभागी 50 वर्ष से अधिक आयु के थे। आईआईएसएम (इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ स्पोर्ट्स एंड मैनेजमेंट) ने 2018 में अध्ययन किया और पाया कि अमेरिका में 75% युवा खेलों में रुचि रखते हैं। चीन में 65% युवा खेलों में रुचि रखते हैं। सिंगापुर में 76% युवा खेलों में रुचि रखते हैं। भारत में 62% युवा खेलों में रुचि रखते हैं लेकिन केवल 1% ही सक्रिय भागीदारी निभाते हैं। कम भागीदारी से प्रतियोगिताओं में कम पदक मिलते हैं और अस्वास्थ्यकर जीवनशैली होती है। भारत में लोग बड़े पैमाने पर क्रिकेट, फुटबॉल, कबड्डी, हॉकी और वॉलीबॉल जैसे खेलों से परिचित हैं।

2. लिंग

भारत में खेलों में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों के आंकड़ों से काफी पीछे है। भारत में लड़कियों को जन्म से ही लड़कों से अलग माना जाता है और लड़कियां जीवन भर इसी सामाजिक मानसिकता का शिकार बनी रहती हैं। जैसे-जैसे लड़कों की खेलों में रुचि बढ़ती है, किशोरावस्था तक पहुंचते-पहुंचते लड़कियों की खेलों में भागीदारी कम हो जाती है। किशोरावस्था के बाद लड़कियों की खेलों में कम भागीदारी के पीछे सामाजिक दृष्टिकोण और असुरक्षाएं मुख्य कारण हैं। लड़कियों को उनके माता-पिता द्वारा खेलों में भाग लेने की अनुमति नहीं है। इसके पीछे मुख्य कारण सामाजिक सोच और असुरक्षित माहौल है।

भारत में महिलाओं के लिए 'उपयुक्त' माने जाने वाले खेल-

कुछ ऐसे खेल हैं जिन्हें कुछ लोग महिलाओं के लिए 'अनुचित' मानते हैं, जैसे मुक्केबाजी, भारोत्तोलन, कुश्ती, कबड्डी और मोटरस्पोर्ट्स। लड़कियों को ज्यादातर इनडोर स्पोर्ट्स पसंद होते हैं। पिछले कुछ सालों में लड़कियां कई आत्मरक्षा खेलों को भी अपनाने लगी हैं। देखा जा रहा है कि भारत के छोटे शहरों

में मध्यमवर्गीय परिवारों की महिलाओं में जिम जाने का चलन बढ़ा है। ग्रामीण स्तर पर भी महिलाओं की शारीरिक गतिविधियों से जुड़े बदलाव देखे गए हैं। पहले की तुलना में अब महिलाएं सुबह-शाम सैर के लिए गांव की सड़कों पर निकलती हैं, लेकिन कुछ साल पहले ऐसा नहीं था। ग्रामीण स्तर पर महिलाएं अपनी पोशाक में स्पोर्ट्स जूते पहनने लगी हैं जो उनकी मानसिकता और खेल के प्रति प्रेम को दर्शाता है। अब महिलाएं भी पुरुषों की तरह खेल गतिविधियों को एक पेशे के रूप में अपना रही हैं। इसलिए लड़कियां स्कूल और कॉलेज स्तर पर भी खेल और एनसीसी से जुड़ी गतिविधियों में शामिल होती हैं। खेलों में महिलाओं की कम भागीदारी, सामाजिक सोच, असुरक्षा और शारीरिक गतिविधियों के लिए स्थानीय स्तर पर वातावरण या खेल के मैदानों की कमी और पुरुषों के अनुपात में महिलाओं का अनुपात असमान है। शारीरिक गतिविधियों में भाग लेना आवश्यक नहीं बल्कि मजबूरी माना जाता है। क्योंकि अधिकतर लोग इन्हें अपने जीवन में रोजगार पाने के लिए या डॉक्टर की सलाह के बाद अपनाते हैं। लोग महिलाओं को खेल-कूद में भेजना अर्थात् अपने घर में किसी अप्रिय घटना को निमंत्रण देना समझते हैं। सामाजिक असुरक्षा और हर काम कम समय में करने की सोच ऐसे हालात पैदा करने में बड़ी भूमिका निभाती है, खेल या अन्य शारीरिक गतिविधि का अभ्यास करने वाली सेटिंग के संबंध में लिंग अंतर देखा जा सकता है: पुरुषों को खेल क्लबों या काम पर शारीरिक गतिविधि में शामिल होने की अधिक संभावना है। महिलाएं घर से लेकर स्कूल या ऑफिस तक के बीच में ही रह जाती हैं। इस अवलोकन के अनुरूप, महिलाओं की तुलना में अधिक पुरुष खेल गतिविधि पर विचार करते हैं। स्थानीय खेल क्लब और अन्य स्थानीय प्रदाता पुरुषों को शारीरिक रूप से सक्रिय होने के कई अवसर प्रदान करते हैं। इन अंतरों को महिलाओं और पुरुषों के लिए जिम्मेदार पारंपरिक लिंग भूमिकाओं से जोड़ा जा सकता है। शोध से पता चलता है कि लिंग के आधार पर विभाजित करने पर ये आंकड़े नाटकीय होते हैं। 29% महिलाओं की तुलना में 42% पुरुषों ने कहा कि वे खेल खेलते हैं। 15-24 वर्ष की आयु के लोग सबसे अधिक खेल खेलते हैं, और शोध से पता चला है कि जो लोग अविवाहित हैं, उनके भी खेलों में भाग लेने की अधिक संभावना है, 54% अविवाहित खेलते हैं, जबकि 30% विवाहित/तलाकशुदा हैं।

खेलों में महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण-

शोध से पता चलता है कि 41% लोगों का मानना है कि महिला खिलाड़ी अपने पुरुष समकक्षों जितने ही अच्छे होते हैं। हालाँकि, सर्वेक्षण में शामिल एक तिहाई भारतीयों का मानना था कि महिला खिलाड़ी वास्तव में पुरुष खिलाड़ियों जितनी अच्छी नहीं हैं। 37% उत्तरदाताओं ने कहा कि महिला एथलीटों में पर्याप्त स्त्रैणता नहीं है, और 38% ने कहा कि महिलाओं की भागीदारी वाले खेल पुरुषों की भागीदारी वाले खेलों की तरह मनोरंजक नहीं हैं। हालाँकि जब पुरस्कार राशि की बात आती है, तो अधिकांश भारतीयों (85%) का मानना है कि पुरुषों और महिलाओं को समान वेतन मिलना चाहिए। केवल एक तिहाई से अधिक उत्तरदाताओं ने एक या अधिक खेलों को चुना जो महिलाओं के लिए उपयुक्त नहीं हैं। लोगों ने इसे लेकर कुछ अन्य कारण भी बताए जो इस प्रकार हैं-

। महिलाओं के लिए खेलना सुरक्षित नहीं है।
 ॥ 29% का मानना है कि महिलाएं पुरुषों की तरह खेल खेलने के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं हैं।

III महिलाएं महीने के हर समय खेल खेलने में सक्षम नहीं हैं।

बीबीसी वर्ल्ड सर्विस के ऑडियंस रिसर्च प्रमुख शांतनु चक्रवर्ती कहते हैं, "हमारे शोध से पता चलता है कि भारत में खेल के प्रति महिलाओं का रवैया जटिल, विरोधाभासी और विपरीत है।

क्रिकेट और कबड्डी में बड़ी लैंगिक असमानता-

इसकी तुलना में 25% पुरुष और केवल 15% भारतीय महिलाएँ क्रिकेट खेलती हैं, जिसमें लिंग का बड़ा अंतर है। कबड्डी में बहुत कम असमानता है, 15% पुरुष और 11% महिलाएँ खेल में भाग लेते हैं। हालाँकि 100% भारतीय दोनों खेलों से परिचित हैं लेकिन भारतीय महिला हॉकी और क्रिकेट टीम को आज तक सामाजिक रूप से पुरुषों के बराबर नहीं देखा गया है।

3. जाति

असम की 18 साल की हिमा दास फिनलैंड के टम्परे में विश्व U20 चैंपियनशिप में 400 मीटर ट्रैक रेस में स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला एथलीट थीं, लेकिन भारतीय सोशल मीडिया कुछ और ही सोच रहा था। हिमा दास की जाति क्या है? यह पहली बार नहीं था जब किसी चैंपियन को जाति के चश्मे से देखा जा रहा था। इससे पहले जब बैडमिंटन चैंपियन पीवी सिंधु ने रियो ओलंपिक में सिल्वर मेडल जीता था। उनकी जाति, विशेषकर आंध्र राज्य और तेलंगाना क्षेत्र पर Google खोज में वृद्धि हुई। भारत में मैदानी स्तर पर देखा जाता है कि अधिकतर खिलाड़ी अपनी ही जाति के कोच से प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहते हैं। अधिकांश खिलाड़ी उस खेल को सीखने में रुचि दिखाते हैं जो उनकी जाति के कोच द्वारा सिखाया जाता है। इसका मुख्य कारण आपस में भेदभावपूर्ण व्यवहार और जातिवाद के दायरे से बाहर न निकलने की सोच है।

भारत में भी जब कोई बच्चा भारतीय सेना में शामिल होने जाता है तो उनके बीच जाति के आधार पर एक रेखा खींच दी जाती है जैसे मराठा बटालियन, सिख बटालियन, राजपूताना बटालियन, जाट बटालियन आदि, जिससे अन्य जातियों के बच्चे हतोत्साहित महसूस करते हैं। जब खेलों पर सिख संप्रदाय का बोलबाला था। उस समय पगड़ी पहनने वाले और सिर पर केस पहनने वाले खिलाड़ी को काफी तवज्जो दी जाती थी। खेल प्रशिक्षण के साथ-साथ चयन प्रक्रिया में भी जाति अवलोकन से इनमें भागीदारी का प्रतिशत कम हो जाता है। सामान्य बच्चे को उसके सर्वोच्च प्रदर्शन के आधार पर ही टीम में चुने जाने की संभावना है अन्यथा नहीं। जिसके कारण खिलाड़ी पर हमेशा अच्छा प्रदर्शन करने का दबाव रहता है। काफी देर तक इस तरह का व्यवहार देखकर वह उस गेम को छोड़ने की कोशिश करता है। इसी कारण से, जब से विदेशों से प्रशिक्षक भारतीय खिलाड़ियों को प्रशिक्षण दे रहे हैं, तब से भारतीय खेलों के स्तर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, चाहे वह भारतीय हॉकी टीम हो या फुटबॉल और एथलेटिक्स।

लोगों ने देखा है कि कुश्ती खिलाड़ी सुशील कुमार और नरसिंह यादव के बीच जाति को लेकर बड़ी लड़ाई हुई थी। बाद में नरसिंह यादव को डोपिंग का दोषी पाया गया और उन्हें कुश्ती का खेल हमेशा के लिए छोड़ना पड़ा। सूत्रों से पता चला कि सुशील कुमार की जाति के एक अन्य खिलाड़ी ने नरसिंह यादव के खाने में प्रतिबंधित पदार्थ मिला दिया था। इसकी वजह यह भी थी कि सोनीपत के बहालगढ़ में जहां वह ट्रेनिंग कर रहे थे, वहां सुशील कुमार की जाति के लोगों की बहुतायत है। 1936 के बर्लिन ओलंपिक में एडॉल्फ हिटलर ने लंबी कूद, 100 मीटर, 200 मीटर, 4X100 के चार स्वर्ण पदक विजेता जेसी ओवेन्स

से हाथ मिलाने से इनकार कर दिया। उस समय जातिवाद का रंग उभरकर हमारे सामने आया। एक और कहानी 1968 के मेक्सिको सिटी ओलंपिक और 1972 के म्यूनिख ओलंपिक के दौरान काली शक्ति की सलामी की थी जिसने कुछ लोगों को झुकझोर कर रख दिया था। 1968 के ओलंपिक में, टॉमी स्मिथ और जॉन कार्लोस 200 मीटर स्प्रिंट में क्रमशः पहले और तीसरे स्थान पर रहे। जब उन्होंने अपने पदक एकत्र किए, तो दोनों ने अपना सिर झुका लिया और काले दस्ताने के साथ अपनी मुट्ठियाँ ऊपर उठा लीं। अमेरिकी राष्ट्रगान बजने तक उन्होंने हाथ ऊपर उठाये रखा। तीनों विजेताओं ने अपनी जैकेटों पर मानवाधिकार बैज भी पहना था। अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के अध्यक्ष ने उन्हें अमेरिकी टीम से निलंबित करने का आदेश दिया, उन्हें ओलंपिक गांव से प्रतिबंधित कर दिया और निष्कासित कर दिया गया। यह अन्य खेलों की तरह क्रिकेट में भी अधिक दिखाई देता है। जब भारतीय क्रिकेटर अपने ऑस्ट्रेलिया दौरे के दौरान इतिहास फिर से लिख रहे थे, तब मोहम्मद सिराज और जसप्रीत बुमरा को नस्लीय दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के दौरान डैरेन सैमी को उनके कुछ साथी 'कालू' (काला) कहकर बुलाते थे। बाद में उन्हें पता चला कि वे उनकी त्वचा के रंग का जिक्र कर रहे थे।

4. धर्म

भारत धार्मिकता के आधार पर विभिन्न पहलुओं को देखता है। देखा गया है कि खेलों में मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी बहुत कम है। तैराकी, जिम्नास्टिक, कुश्ती, कबड्डी आदि खेलों में मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी नगण्य है। क्रिकेट, हॉकी, फुटबॉल आदि बड़े खेलों में मुस्लिम पुरुषों की भागीदारी अच्छी संख्या में पाई जाती है। इसी प्रकार सिख समुदाय के संबंध में यह देखा गया है कि सिख महिलाओं और पुरुषों की खेल गतिविधियों में भागीदारी अन्य धर्मों की तुलना में अधिक पाई जाती है। सिख समुदाय में खेलों के प्रति अधिक जागरूकता है। यहां महिलाओं को खेलों में भाग लेने की भी पूरी आजादी मिलती है। सिख समुदाय की तरह हिंदू समुदाय के पुरुषों और महिलाओं की भागीदारी भी खेलों में अत्यधिक देखी जाती है। लेकिन खेलों में हिंदू महिलाओं की भागीदारी सिख महिलाओं से पीछे है। भारत में ईसाई खेलों में बहुत कम रुचि दिखाते हैं। वे अधिकतर खेलों में भाग लेते हैं जिनमें मानसिक क्षमताओं का अधिक उपयोग होता है और शारीरिक क्षमताओं का कम उपयोग होता है। जलीय गतिविधियाँ, जिम्नास्टिक, पोलो, क्रिकेट, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, टेनिस, बिलियर्ड्स और स्क्वैश आदि खेलें। इनमें भागीदारी का प्रतिशत कबड्डी, कुश्ती, खो-खो आदि से अधिक है। यह देखा गया है कि इस समुदाय के पुरुष और महिलाएं इसे अपनाते हैं। जीवन की शुरुआत में शारीरिक गतिविधियाँ। ईसाई समुदाय के लोग जीवनभर खेल संबंधी गतिविधियों को अपने जीवन का हिस्सा बनाए रखते हैं।

5. आय

विद्यार्थियों की खेलों में भागीदारी उनके परिवार की आर्थिक स्थिति पर भी निर्भर करती है। जो छात्र अच्छी आर्थिक स्थिति वाले परिवारों से हैं। वे आमतौर पर खेलों में कम रुचि दिखाते हैं। आर्थिक रूप से समृद्ध बच्चे ऐसे खेलों में रुचि दिखाते हैं जो पैसे के आधार पर खेले जाते हैं। अच्छी आर्थिक स्थिति वाले परिवार के सदस्यों की मानसिकता भी बच्चे को ऐसे खेलों की ओर ले जाती है जिन्हें अमीर

परिवारों के बच्चे खेलते हैं। आजकल अमीर परिवारों के बच्चों को (वीआर) वर्चुअल रियलिटी जैसे गेम खिलाना ज्यादा पसंद है। जिस पर वह उम्मीद से ज्यादा समय बिताते हैं। वर्चुअल रियलिटी की मदद से खिलाड़ी अपने घर के कमरे में ही विश्व स्तरीय कोच से ट्रेनिंग ले सकता है। बच्चे आभासी वास्तविकता के सामान्य खेलों की तुलना में अधिक आनंद प्रदान करते हैं। इसलिए वह वास्तविक क्षेत्र की तुलना में काल्पनिक कमरे में अधिक समय बिताता है। भारत में आर्थिक रूप से मजबूत परिवारों के बच्चे शूटिंग, स्क्वैश, पोलो, बिलियर्ड्स, तैराकी, क्रिकेट, तीरंदाजी, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, टेनिस और साइकिलिंग जैसे खेलों को चुनना पसंद करते हैं। जबकि आर्थिक रूप से कमजोर बच्चा न्यूनतम खेल उपकरणों के साथ बाहर खुले मैदान में खेलता है। वह कम लागत वाले गेम ही चुनते हैं। वह आर्थिक रूप से कम महंगे खेलों को चुनता है और उसी में अपना करियर बनाने की कोशिश करता है। आर्थिक रूप से कमजोर बच्चा ऐसे खेल का चयन करता है जिसमें खेल सामग्री की न्यूनतम आवश्यकता हो। एथलेटिक्स, कुश्ती, कबड्डी, खो-खो, फुटबॉल, हॉकी आदि जैसे खेल। आजकल वह अपने आयु वर्ग के अनुसार अपना खेल चुनता है। प्रशिक्षक यह भी सुझाव देते हैं कि उसे अपनी पारिवारिक स्थिति के अनुसार खेल चुनना चाहिए। भारत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निशानेबाजी प्रतियोगिताओं में लगातार पदक जीत रहा है। यह राइफल या पिस्टल गन की तकनीकों पर भी निर्भर करता है। ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतने वाले अभिनव बिंद्रा ने कहा था कि मैंने इस खेल में प्रशिक्षण के लिए इतना खर्च किया है, जितना सरकार ने मुझे ओलंपिक स्वर्ण पदक जीतने के बाद पुरस्कार राशि के रूप में भी नहीं दिया है। एक सामान्य परिवार से आने वाला बच्चा इतने महंगे खेल उपकरण खरीदने में सक्षम नहीं है। इसलिए वह महंगे खेल चुनने से बचते हैं। महंगे खेलों में कम मेहनत करने से पदक मिलने की संभावना अधिक होती है। गोल्फ, बिलियर्ड्स और घुड़सवारी जैसे खेल तो छोटे शहरों के बच्चों ने आज तक देखे ही नहीं, वे वहां प्रशिक्षण लेने के बारे में सोच भी कैसे सकते हैं।

6. वैवाहिक स्थिति

शोध से पता चला है कि जो लोग अकेले हैं उनके भी खेलों में भाग लेने की अधिक संभावना है, उनमें से 54% अविवाहित खेल खेलते हैं, जबकि 30% विवाहित/तलाकशुदा हैं। विवाह को लड़की का दूसरा जन्म माना जाता है क्योंकि वह पुराने वातावरण को छोड़कर नए वातावरण में प्रवेश करती है। शादी के बाद लड़की का खेलों में भाग लेना लड़के के परिवार वालों की मानसिक सोच पर निर्भर करता है। वे पारिवारिक खेल गतिविधियों को कैसे देखते हैं? इसी तरह, शादी के बाद लड़का भी अपने पारिवारिक जीवन पर अधिक ध्यान देने लगता है, जिससे खेल गतिविधियों में उसकी निरंतरता कम हो जाती है। शादी के बाद महिलाओं की शारीरिक गतिविधियों और खेलों में कम भागीदारी देखी जाती है। सामाजिक परिवर्तन एवं पारिवारिक विकास वहीं महिलाओं के लिए समय की कम उपलब्धता भी एक मुख्य कारण है। घरेलू कामकाज के साथ-साथ सामाजिक स्तर पर बच्चों का पालन-पोषण उनकी जिम्मेदारी मानी जाती है। शादी के बाद पति-पत्नी के बीच कैसा रिश्ता है? इसका सीधा असर खेल गतिविधियों में उनकी भागीदारी पर भी पड़ता है। गोल्फ के दिग्गज और दुनिया के सबसे अमीर खिलाड़ी टाइगर वुड्स लगातार दुनिया में नंबर एक स्थान पर रहे। उनका अपनी पत्नी एलिन नॉर्डग्रेन के साथ पारिवारिक विवाद चल रहा था, जिसके कारण गोल्फ खेल में उनकी रैंकिंग 1 लगातार गिरती जा रही थी। पिछले

साल 2019 में भारतीय क्रिकेट गेंदबाज मोहम्मद सामी के साथ भी ऐसा ही हुआ था, जब सामी का अपनी पत्नी हसीन जहां से घरेलू विवाद हो गया था। इसी तरह पिछले दिनों जब विराट कोहली लगातार अच्छा प्रदर्शन करने में असफल रहे तो उनकी पत्नी अनुष्का शर्मा ने मैदान पर उनका हौसला बढ़ाया, जिसका विराट के प्रदर्शन पर सकारात्मक असर दिखा। भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी पुलेला गोपीचंद बैडमिंटन खिलाड़ी पीवीवी लक्ष्मी ने 2002 में शादी की। दोनों ने बैडमिंटन के खेल को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। ये दोनों लगातार खेल गतिविधियों को बढ़ावा देने के साथ-साथ बैडमिंटन खेल के लिए कई प्रशिक्षण केंद्र भी चला रहे हैं। आजकल उनके बेटे साई विष्णु पुलेला भी बैडमिंटन खेल रहे हैं। पुलेला गोपीचंद भारत के एकमात्र खिलाड़ी हैं जिन्हें राजीव गांधी खेल रत्न, अर्जुन और द्रोणाचार्य तीनों पुरस्कार मिले हैं और इसमें उनकी पत्नी का मुख्य योगदान रहा है। शटलर साइना नेहवाल और पारुपल्ली कश्यप की शादी 14 दिसंबर, 2018 को हुई थी। ये दोनों भी भारत के लिए लगातार खेल रहे हैं। शारीरिक गतिविधि और खेलों में भाग लेने का माहौल न केवल हमारे घर पर, बल्कि हमारे आस-पास के लोगों की सोच पर भी प्रभाव डालता है। यह उन्हें हमारे परिवार के सदस्यों के साथ खेलों में भाग लेने के लिए भी प्रेरित करता है।

निष्कर्ष

हमारे समाज की सामाजिक संरचना और हमारी आर्थिक स्थिति यह निर्धारित करती है कि हम इनमें भाग लेने के लिए किस दिशा में जाएंगे। देश की अधिकांश आबादी खेल और शारीरिक गतिविधियों में भाग तो लेना चाहती है, लेकिन वह इन्हें अपनी दिनचर्या का हिस्सा नहीं बना पाती है। प्राचीन काल से ही विभिन्न शहरों और उनके धार्मिक आयोजनों में शारीरिक गतिविधियों को विशेष सम्मान की दृष्टि से देखा जाता रहा है। उस समय हिंदू धर्म के लोग लाठी चलाना, सिख धर्म के लोग गतका, मुस्लिम धर्म के लोग घुड़सवारी और कुश्ती तथा ईसाई धर्म के लोग क्रिकेट और बैडमिंटन खेलना अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानते थे। वे उन्हें अपने जीवन में अपनाते हैं, इसलिए शारीरिक गतिविधियों और खेलों में भाग लेने के लिए हमारे आसपास पूरी सुविधाओं का होना बहुत जरूरी है। काफी समय से बच्चा अपना ज्यादातर समय सोशल मीडिया पर बर्बाद कर रहा है। उद्योगों ने खेलों में आभासी वास्तविकता को बड़े पैमाने पर अपनाना शुरू कर दिया है। इस नई तकनीक से बच्चा एक कमरे में कैद होकर सामाजिक संरचना से वंचित हो गया है। किशोरों में आत्महत्या के बढ़ते मामलों को देखते हुए सरकार बच्चों को शारीरिक गतिविधियों में भी भाग लेने के लिए प्रोत्साहित कर रही है। यह देखा गया है कि पिछले 2 वर्षों में आत्महत्या के कुल मामलों में से 15% किशोर बच्चे थे। और सबसे ज्यादा आत्महत्या करने वाले राज्यों में मध्य प्रदेश का नाम था। खेलों में भाग लेने से जीवन में सफलता मिलती है। मलेशिया में शोध किया गया है कि जो बच्चे शारीरिक और खेल गतिविधियों से दूर रहते हैं, उनके ड्रग्स, जुआ, लड़ाई आदि जैसी बुरी आदतों में शामिल होने की संभावना अधिक होती है। इससे परिवार और समाज को भी नुकसान होता है।

संदर्भ सूची

1. मजूमदार, पी.के. (2010), जनसांख्यिकी के मूल सिद्धांत, नई दिल्ली, रावत प्रकाशन ।
2. ईम आर, सॉयर एन, हार्वे जे, केसी एम, वेस्टरबीक एच, पायने डब्ल्यू, सार्वजनिक स्वास्थ्य और खेल प्रबंधन को एकीकृत करना: खेल भागीदारी रुझान 2001-2010, स्पोर्ट मैनेज रेव. 2015;18(2):207-17.
3. जेनिफर फ़ार आर, नैन्सी लफ़ एल, एंजेला टेरेंसियो एम, संयुक्त राज्य अमेरिका में महिलाओं के बीच शारीरिक गतिविधि और खेल भागीदारी के सामाजिक जनसांख्यिकीय निर्धारक 2020;8(7):96। डीओआई: 10.3390/स्पोर्ट्स8070096।
4. रोशेल ईम एम, जैक हार्वे टी, मेलानी चैरिटी जे, मेघन केसी एम, हंस वेस्टरबीक, वॉरेन पायने आर. बीएमसी स्पोर्ट्स साइंस, मेडिसिन एंड रिहैबिलिटेशन (12 मार्च 2016, 8(6)।
5. बोग्यू, डी.जे. (1969) जनसांख्यिकी के सिद्धांत। न्यूयॉर्क: विली ।
6. वैन तुयकोम सी, शीडर जे, ब्रैके पी. नियमित खेल भागीदारी में लिंग और उम्र की असमानताएं: 25 यूरोपीय देशों का एक क्रॉस-नेशनल अध्ययन। जे खेल विज्ञान. 2010;28(10):1077-84 ।
7. जिया-उल-इस्लाम सैयद, सलाहुद्दीन खान। खेल भागीदारी पर धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतिबंधों का प्रभाव; हरिपुर विश्वविद्यालय, 2020 ।
8. रिले, एन ई. (1998)। जनसांख्यिकी में लिंग पर शोध: सीमाएं और प्रतिबंध। जनसंख्या अनुसंधान और नीति समीक्षा। 17: 521-538 ।
9. <https://bizbehindsports.com/2020/04/19/bbc-report-says-under-30-of-women-in-india-engage-in-sports/> अप्रैल, 2020 ।
10. स्ज़ेटर, एस. (2007). पंजीकरण का अधिकार: विकास, पहचान पंजीकरण, और सामाजिक सुरक्षा: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य। दुनिया विकास, 35: 67-86 ।